

---

.. agastyAShTakam ..

॥ अगस्त्याष्टकम् ॥

---

अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ।  
अद्य मे सफलं ज्ञानं शम्भो त्वत्पाददर्शनात् ॥ १ ॥  
कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं महेश्वर ।  
अद्य ते पादपद्मस्य दर्शनात्भक्तवत्सल ॥ २ ॥  
शिवश्शम्भुः शिवश्शंभुः शिवश्शंभुः शिवश्शिवः ।  
इति व्याहरतो नित्यं दिनान्यायान्तु यान्तु मे ॥ ३ ॥  
शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिर्भवेभवे ।  
सदा भूयात् सदा भूयात्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥ ४ ॥  
आजन्म मरणं यस्य महादेवान्यदैवतम् ।  
माजनिष्यत मद्दंशे जातो वा द्राग्विपद्यताम् ॥ ५ ॥  
जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्याऽपि देहिनः ।  
माभून्मम कुले जन्म यस्य शम्भुर्न-दैवतम् ॥ ६ ॥  
वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्त्रये ।  
आदिदेवो महादेवो यदस्मत्कुलदैवतम् ॥ ७ ॥  
हर शंभो महादेव विश्वेशामरवल्लभ ।  
शिवशङ्कर सर्वात्मनीलकण्ठ नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥  
अगस्त्याष्टकमेतत्तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९ ॥  
॥ इत्यगस्त्याष्टकम् ॥

Encoded and proofread by N.Balasubramanian bbalu at sify.com

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated October 3, 2010

<http://sanskritdocuments.org>